| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

Dr. Anchal Meena

Assistant Professor, SBRM Govt. College Nagaur, Rajasthan, India

सार

संसार में परमात्मा ने स्त्री - शक्ति का मुकाबला करने वाली कोई दूसरी शक्ति उत्पन्न नहीं की। वास्तव में भारतीय इतिहास में गौरवपूर्ण अध्याय के निर्माण कार्य में जितना सहयोग स्त्री शक्ति ने दिया है उतना अभी तक किसी ने नहीं दिया। आदिकाल में भी जब - जब देवासुर - संग्राम छिड़ा राक्षसी शक्ति को नष्ट करने के लिए दैवी शक्ति का आश्रय लिया गया। भारत के स्वाधीनता संग्राम में आक्रमणकारियों के विरुद्ध सदैव स्त्री शक्ति अग्रणी रही। अंग्रेजी शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम अनेक दौरों से गुजरा। 1857 के विद्रोह में विश्व के सबसे महान् व शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी गई। 1857 के इस विद्रोह में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल जैसी वीरांगनाओं का योगदान विशेष उल्लेखनीय रहा। गांधी युग में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आंदोलन में परिवर्तित हो गया। इस युग में सभी धर्मों व सम्प्रदायों के अनुयायियों तथा जनता के प्रत्येक वर्ग ने बढ़ - चढ कर भाग लिया। इस कार्य में महिलाएँ भी पीछे नहीं रही। आरंभ से लेकर अंत तक उन्होंने न केवल शंतिपूर्ण आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया अपितु वे क्रांतिकारी गतिविधियों में भी सक्रिय रहीं। गांधी जी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्षधर थे। राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की बल्कि गिरफ्तार भी हुई। कुल मिलाकर महिलाओं के अंदर इस समय जो राष्ट्रचेतना पैदा हुई थी उसने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति है जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से उन्मुक्त होकर लड़ सकती है। इस समय जिन स्त्रियों ने इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया था उनमें एक पंक्ति उनकी भी थी जो गांधी जी के अहिंसावादी नीति का अनुसरण कर रही थीं और दूसरी पंक्ति उनकी थी जिन्होंने क्रांति का मार्ग चुना था। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को महिलाओं ने विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया है।

किसी भी राष्ट्र के सुदृढ़ ढाँचे, उस राष्ट्र के निर्माण और रख-रखाव में जितना हिस्सा पुरुष वर्ग का है उतना ही बल्कि उससे भी कहीं अधिक नारी वर्ग का होता है। प्रश्न उठ सकता है कि चलो बराबर तो हुआ परन्तु अधिक कैसे हो गया? तो इसे आप यूँ समझ सकते हैं कि चाहे नारी किसी क्षेत्र में सक्रिय न भी रहे तो भी पुरुष की सफलता के पीछे स्त्री हर समय उपस्थित अवश्य ही रहती है। पुरुष वर्ग भी समर्पित भाव से कहीं भी कार्य तभी कर सकता है जब वह अपने दायित्वों के प्रति निश्चिंत हो जाए, परन्तु बड़े-बड़े विद्वान भी इस सत्य से इनकार नहीं कर सकते कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में स्त्री की ही मुख्य भूमिका रहती है। पुरुष का नम्बर तो उसके बाद आता है।

परिचय

भारतीय स्वतंत्रता - आन्दोलन का इतिहास स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अदभुत गाथा है। इस संघर्ष में पुरूषों और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। घर का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई, वह इतिहास की धरोहर है। सन् 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतत्रत्रता संग्राम का पहला ऐसा विस्फोट था, जिसकी नायक एक महिला थी, जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया। उसके लिये स्वयं अंग्रेज शासक भी प्रशंसा किये बगैर नही रह सके। सर हयूरोज को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि "सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थीं।" रामगढ़ की रानी ने जहाँ रणक्षेत्र में लड़ते - लड़ते प्राण दे दिये वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजों के समक्ष आत्म समर्पण

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

कर अपमानित होने के बजाए नेपाल की ओर चल पड़ी, जहाँ वनवास में उनकी मृत्यु हुई और जीनत महल को बर्मा में निर्वासित कैदी के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में स्थापना ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। इसकी स्थापना के कुछ वर्षों बाद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलाएं प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आने लगीं। 1890 के कलकत्ता अधिवेशन में स्वर्ण कुमारी देवी और [1] श्रीमती कादम्बिनी गांगुली ने भाग लिया। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होनें राष्ट्रीय कॉंग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह सम्भवतः भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश का शुभारम्भ था और इसके बाद तो मातृभूमि की खातिर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढती ही चली गयी। इन महिलाओं को उत्साहित कर एवं उन्हे संगठित कर एक लक्ष्य महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाकर दिया। इससे महिलाओं को न केवल एक उद्धेश्य मिला अपितु उन्हे एक नयी दिशा भी मिली। जब 1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया, तो बड़ी संख्या में महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी शक्ति का परिचय दिया। स्वदेशी प्रचार के पक्ष में वातावरण बनाने के लिये विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी। शराब की दुकानें धरना देकर बंद कराई जाने लगी। उसी तरह 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तो हजारों की संख्या में महिलायें घरों से बाहर निकल आई। उन्होंने तन-मन से इस आन्दोलन में सहयोग दिया। संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर और अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक गतिविधियों की बागडोर सम्भाली जब अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने सींखचों में जकड़कर रखा था। उस समय राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती सरोजनी नायडू, अरूणा आसिफ अली, श्रीमती सुचेता कृपलानी, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, एनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा।

निःसंदेह गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन से लेकर भारत की स्वाधीनता तक महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में जो योगदान था, वह भारतीय परिवेश में उनकी जागरूकता एवं परिवर्तनों को दर्शाता है। महिलाओं में सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा सामाजिक पिछड़ेपन की स्थिति को गांधीजी के दर्शन ने बदल दिया था। उनकी भीरूता का स्थान साहस ने ले लिया, उनके अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता के स्थान पर जागरूकता दिखाई देने लगी एवं उनमें राजनीति परिपक्वता का बोध होने लगा। कुल मिलाकर भारतीय महिलाओं के उत्थान का यह स्वर्णिम काल था।

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजों की तन-मन-धन से सहायता की थी। उनको यह विश्वास था, कि युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार उन्हें कुछ राजनीतिक अधिकार अवश्य प्रदान करेंगी। परन्तु युद्ध की समाप्ति के बाद भारतीयों को निराशा ही हाथ लगी। वास्तव में यह ब्रिटिश कूटनीति थी। इससे जनता में रोष व्याप्त हो गया। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध से भारतीयों में व्याप्त राष्ट्रीय चेतना में और अधिक वृद्धि हुई। रोलेट एक्ट, जलिया वाला बाग हत्याकांड, हंटर रिपोर्ट, तथा खिलाफत आन्दोलन इन सभी घटनाओं से संपूर्ण भारत की जनता के साथ-साथ गांधी जी भी असंतुष्ट थे। उन्होंने सरकार द्वारा प्रदत्त 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि को लौटा दिया तथा सत्याग्रह के माध्यम से असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात किया। भारतीय राजनीति और स्वाधीनता आन्दोलन के इतिहास में 1928 का वर्ष नये युग[2] का प्रतीक था। इस वर्ष महात्मा गांधी का सक्रिय रूप से भारतीय राजनीति के रंगमंच पर पदार्पण हुआ जब उन्होंने असहयोग आन्दोलन की घोषणा की उनकी दृष्टि में ब्रिटिश सरकार से असहयोग आन्दोलन के लिये यह उपयुक्त अवसर था। सितम्बर 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन इस उद्धेश्य से आयोजित किया गया था, जिसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे। इस अधिवेशन में महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा। चितरंजन दास जैसे नेताओं के विरोध के बावजूद यह प्रस्ताव भारी बहुमत से स्वीकार किया गया था।

दिसम्बर 1920 में नागपुर में हुए कांग्रेस के नियमित अधिवेशन में गांधी जी के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया। इसके साथ ही राष्ट्रीय आन्दोलन एवं कांग्रेस पर महात्मा गांधी का असाधारण प्रभाव स्थापित हो गया। आन्दोलन को सफल बनाने के लिये न केवल पुरूषों ने बल्कि महिलाओं ने भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। गांधी जी ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने का आहवान किया जिसका उन्होंने अनुकूल प्रतिसाद दिया।

असहयोग आन्दोलन का उद्धेश्य ब्रिटिश शासन तंत्र को पूरी तरह ठप्प करना था। इसके लिये ब्रिटिश भारत की समस्त राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक संस्थाओं के बहिष्कार का निश्चिय किया गया। इस आन्दोलन के मुख्य प्रस्ताव में गांधी जी ने पूरे देश से आह्वान किया था, कि इस अहिंसात्मक

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

आन्दोलन को तब तक चलाया जाये जब तक खिलाफत संबन्धी अन्याय दूर न हो जाये और स्वराज्य प्राप्त न हो जाये। आन्दोलन का कार्यक्रम निम्नवत् था :-

1. सरकारी स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार।
2. सरकारी पदों का त्याग।
3. चुनावों का बहिष्कार।
4. सरकारी अदालतों का बहिष्कार।
5. विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार।
6. सरकारी उत्सवों का बहिष्कार।
7. भारतीयों द्वारा मैसोपोटामिया में जाकर कार्य करने से इन्कार।

झांसी से उठने वाला विदेशी सत्ता के विरुद्ध खुला विद्रोह ही स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम रूप-रेखा बना, जिसे प्रथम स्वर दिया एक नारी ने। निःसंदेह नारी की स्वतंत्रता संग्राम में यह उल्लेखनीय भूमिका रही है। स्वतंत्रता संग्राम में सन् 57 में चमकने वाली इस पुरानी तलवार के ताल पर बुंदेलखण्ड में गूँजता झांसी की रानी का यशगान ही उनकी अमर कथा कहता है। ओजस्वी कवियत्री श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में-

''चमक उठी सन् सत्तवन में, वह तलवार पुरानी थी
खूब लड़ी मरदानी, वह तो झांसी वाली रानी थी।
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मरदानी, वह तो झांसी वाली रानी थी।''

इस पुरानी तलवार के पीछे जो फौज थी, उसके बहुत से महत्वपूर्ण पदों पर महिलाएँ तैनात थीं, जिन्होंने अंग्रेजों को छटी का दूध याद दिया दिया था। इसमें रानी के तोपखाने पर तैनात दो बहनों के नाम बड़े ही गर्व से लिए जाते हैं। झलकारी रानी की अंगरक्षक थी। रानी लक्ष्मीबाई के गम्भीर रूप से घायल होने पर उनका छत्र और मुकुट लगाकर झलकारी ने अंग्रेजों को तब तक भ्रम में रखा जब तक रानी की समाधि नहीं बन गई। अन्त में झलकारी के पति के वीरगति प्राप्त करने पर ही अंग्रेज सच्चाई को जान पाए, परन्तु वे उसे झुका नहीं सके। इतने लम्बे समय तक अंग्रेज फौजों से लड़ना कोई हँसी-ठट्ठे का काम नहीं था जिसे झलकारी बाई ने अन्तिम साँस तक बड़े दम-खम से निभाया और अन्त में वीरगति को प्राप्त हुई।[3]

रानी की मृत्यु के साथ ही इस महायज्ञ की अग्नि मन्द तो अवश्य ही पड़ गई परन्तु बुझी नहीं और समय पाकर फिर भड़क उठी। अब तक तो अंग्रेजों ने भारत की अर्थ व्यवस्था नष्टप्रायः कर दी थी। पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में ''यह व्यवस्था भारत की किसी भी आवश्यकता की पूर्ति नहीं करती। यह न ही देश के काम की है और न ही आम जनता के हित में है।'' नेहरू जी ने अपनी पुस्तक 'वीमेंस ऑफ़ इण्डिया' में लिखा है, 'उनकी (अंग्रेज़ शासकों की) इच्छा थी कि वही नीति चलाई जाए जिससे भारतीयों को अधिक से अधिक दबाया जा सके और शासक वर्ग का हितसाधन हो।' अंग्रेजों के इन कुचक्रों के बाद भी अत्यल्प मात्रा में ही सही परन्तु भारतीय नारी ने स्वतंत्रता संग्राम की मुख्य धारा से जुड़ने का प्रयास जारी रखा था।

विचार-विमर्श

भारत को स्वतंत्र कराने का जो अभियान था वह यद्यपि गांधी जी के राजनीति में आगमन के बाद व्यापक स्तर पर शुरू हुआ। परन्तु देश को स्वतंत्र कराने का अभियान बहुत पहले ही शुरू हो चुका था। 1857 के विद्रोह ने ब्रिटिश सत्ता का अंत करने के प्रयास को लेकर सर्वप्रथम शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी। "1857 के संग्राम का शुभारंभ सर्वप्रथम सैनिक छावनियों से हुआ। जवान मंगल पांडे द्वारा अपने सार्जेंट पर गोली चलाने के साथ ही क्रांति का बिगुल बज उठा।"1 देखते ही देखते यह स्वतंत्रता संग्राम कानपुर, लखनऊ, बनारस, इलाहबाद, बरेली, जगदीशपुर और झाँसी आदि जगह पर फैल गया तथा नाना साहब, तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबाई, मौलवी अहमदशाह, कुंवर सिंह जैसे अनेक नेता इस संग्राम से जुड गए। 1857 ई. की क्रांति को अंग्रेज विद्वान 'सिपाही विद्रोह' की संज्ञा देकर तथा एक आकस्मिक घटना बताकर टाल देते है। लेकिन "1857 का विद्रोह कोरा विद्रोह नहीं था बल्कि स्वाधीनता संघर्ष था। जिससे प्रायः सभी राष्ट्रवादी नेताओं ने बाद में प्रेरणा ली।"2 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ वीर योद्धाओं ने अपनी जान दाँव पर लगाई वहीं हमारी वीरांगनाओं ने भी अंग्रेजों का डटकर मुकाबला किया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हज़रत महल, अवन्ती बाई लोदी, टेस बाई और अजीजन जैसी अनेक वीरांगनाओं ने युद्ध में अंग्रेजों के सम्मुख अपना लोहा मनवाया।हमारे

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

यहाँ युद्ध में अनेक देवियों ने शत्रुओं के दाँत खट्टे किए है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक वीरांगनाओं ने देश के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया। देश के लिए प्राणों को उत्सर्ग करने वाली वीरागनाओं में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम अग्रण्य है। जिन नारियों ने भारत माता के गौरव को ऊँचा किया है, उनमें महारानी लक्ष्मीबाई महान थीं। यही वह महिला थीं, जिसने भारत की स्वतंत्रता की मशाल लेकर [4] भारत की स्वाधीनता के लिए हँसते-हँसते अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। उनका शौर्य, साहस और बलिदान हमेशा भारतीय महिलाओं को वीरता की प्रेरणा देता रहेगा। हिन्दी के अनेक कवियों ने रानी की वीरता का गुणगान किया है।'10 मई, 1857 को मेरठ में विद्रोह के आरंभ होने के बाद 30 मई, 1857 को अवध में विद्रोह की घोषणा की गई।'4 अंग्रेजों के विरुद्ध इस विद्रोह की नेता अवध के नवाब वाजिद अली शाह की बेगम, हज़रत महल थीं। 1 'बेगम हज़रत महल एक नर्तकी थी।'2 अपने सौन्दर्य व गुणों के कारण वे अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह की बेगम बन गई। सुन्दरता के साथ-साथ हज़रत महल में प्रशासनिक योग्यता कूट-कूट कर भरी हुई थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक और मोहक था। मई, 1857 के अंत में अवध में विद्रोह को भड़काने में बेगम हज़रत महल ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। शीघ्र ही विद्रोह की चिंगारी अवध के अन्य प्रदेशों में भी फैल गई। जून, 1857 के अंत तक लखनऊ की रेजीडेंसी, जहाँ अंग्रेजों ने शरण ली थी, शहर के अन्य भागों पर विद्रोहियों का अधिकार हो चुका था। जब कानपुर में क्रांति की अग्नि प्रज्वलित हुई तो उसमें कानपुर की वीरांगना अजीजन का प्रशंसनीय योगदान था। 'अजीजन बेगम अपने समय की प्रसिद्ध नर्तकी थी।'4 कानपुर में क्रांति के शुरू होने पर 'अजीजन ने वीर, साहसी और निर्भय महिलाओं की एक टुकड़ी तैयार की।'5 उस महिला सैनिक दल की वीरांगनाएँ पुरुष वेश में घोड़ों पर सवार हाथ में नंगी तलवार लेकर निकल पड़ी, वे पुरुषों को स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए कहती, वे घायलों की सेवा सुश्रूषा करती तथा युद्धरत सैनिकों को दूध, मिठाई और फल बांटती। जब आवश्यकता पड़ती तो रणभूमि में संकट तथा गोली वर्षा की परवाह न कर युद्धरत सैनिकों को कारतूस पहुचांती। यह सब वीरांगना अजीजन की प्रेरणा तथा नेतृत्व का चमत्कार था कि परदे में रहने वाली स्त्रियाँ रणभूमि में थीं।

हिन्दुस्तान में बींसवी सदी का उदय स्वदेशी आन्दोलन के उदय के साथ जुड़ा है। स्वदेशी आन्दोलन वास्तव में बंगाल-विभाजन के विरोध में एक आन्दोलन के रूप में पैदा हुआ। उस समय उड़ीसा और बिहार भी इसी राज्य के हिस्से थे। असम 1874 में ही अलग हो गया था। इतने बड़े राज्य का प्रशासन चलाना वास्तव में कठिन था, लेकिन अंग्रेजों ने इस राज्य के बँटवारे का फैसला प्रशासनिक कारणों से नहीं, बल्कि राजनीतिक कारणों से लिया। 20 वीं सदी के आरंभ से ही आभास हो रहा था कि भारत में राष्ट्रीय चेतना विकसित होती जा रही थी और जुझारू रूख अख्तियार कर रही थी। भारतीय राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र था बंगाल। अंग्रेजों द्वारा बंग-भंग का कदम इसी जुझारू चेतना पर आघात करने और 'फूट डालो और राज करो' की नीति के अंतर्गत उठाया गया था, जिसका तीव्र विरोध हुआ।देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए न केवल भारतीय नेताओं ने अपनी जान की बाजी लगाई बल्कि अनेक विदेशी नागरिकों ने भी भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना योगदान दिया। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में एनी बेसेंट और उनके होमरूल आन्दोलन का विशेष योगदान रहा। एनी बेसेंट का जन्म अक्टूबर, 1847 में लंदन में हुआ था। "1893 में एनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसाइटी के आमंत्रण पर भारत पहुँची।" एनी बेसेंट हिंदू धर्म से बहुत प्रभावित थी। उन्होंने हिन्दू धर्म, दर्शन और संस्कृति के अध्ययन के साथ-साथ हिंदू आचार-व्यवहार को भी आदर की दृष्टि से देखा। एनी बेसेंट ने भारतीयों को अपनी मान्यताओं के प्रति सम्मान करना सिखाया।

महात्मा गाँधी और सुभाष चन्द्र बोस जैसे नेता स्वतंत्रता की मशाल लेकर इस महासंग्राम की रणभूमि में उतर चुके थे। इनका साथ देने के लिए चारों ओर से जन समुद्र उमड़ा पड़ रहा था, ऐसे में उनकी हुंकार में अपना स्वर मिलाने से भारतीय नारी भला कैसे पीछे रह सकती थी? इस हुंकार में जो पहला नारी-स्वर जुड़ा वह बम्बई के एक सम्पन्न पारसी घराने की चौबीस वर्षीय युवती 'श्रीमती भीकाजी कामा' का था। देश की स्वतंत्रता के संग्राम में हिस्सा लेने से इस सम्पन्न महिला को कोई भी सुख-सुविधा न रोक सकी। श्रीमती कामा अपने संकल्प को निभाने के लिए कांग्रेस से आ मिलीं। आगे चलकर इसी विदुषी वीरांगना ने भारत को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में तिरंगा दिया। यह झण्डा भीकाजी कामा के मस्तिष्क की उपज के फलस्वरूप हमारे सामने आया है। अन्तर केवल इतना है कि भीकाजी कामा के बनाए झण्डे के मध्य में चरखा कातती महिला हुआ करती थी और आज हम वहाँ अशोक चिन्ह देखते हैं।[5]

पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार श्रीमती ऐनी बेसेंट एक विस्फोटक शक्ति के रूप में उभरीं। इस समय राष्ट्रीय जागरण दक्षिण की महिलाओं में भी काफ़ी जोर पकड़ चुका था। रामाबाई रानाडे, पं. रामाबाई, सरोजनी नायडू, लेडी बोस, पं. विजया लक्ष्मी, अरुणा

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

आसिफ़ अली, अवंतिका बाई और कमला देवी आदि जाने कितने ऐसे नाम हैं जिन्होंने देश के स्वतंत्रता संग्राम में सुनहरे पृष्ठ जोड़े। इन साहसी महिलाओं और दबंग सेनानियों का सहयोग पुरुषों के बलिदानी साहस और मनोबल को सहस्रगुना बढ़ाने में अवश्य ही सक्षम रहा है इसमें कोई भी संदेह नहीं है।

इतना सब होने के बाद भी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों में महिलाओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही गई। श्रीमती कामदार, अवंतिका बाई गोखले, कमलम्मा, सत्यवती, कृष्ण देवी पंजीकर, जयश्री राजा जी, हंसा महतो, पेरिन कप्तान, नीलावती मुंशी, मनीबेन, देव महत्रे बहनें और ऐसे ही अनगिनत नाम हैं जिन्होंने अपने बलिदान से देश के इतिहास का एक सुनहरा अध्याय लिखा है। मद्रास की सबमनी लक्ष्मीपति नमक सत्याग्रह में नेता रही हैं। स्वयं श्रीमती कस्तूरबा गाँधी का योगदान भी जीवन पर्यन्त रहा।

भारत में भारतवासियों का शासन स्थापित कराने में हमें बहुत से विदेशियों का सहयोग भी प्राप्त था। वे सभी अंग्रेजों के कुशासन चक्र में पिसते हुए पीड़ित भारतीयों के प्रति संवेदनशील थे। यहाँ की गरीबी अशिक्षा और पारम्परिक रूढ़ियों को कारण मानकर इन राष्ट्रभक्त विदेशियों ने, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को त्वरा, प्रोत्साहन और सक्षमता प्रदान की। इसमें विदेशी मूल आयरलैण्ड की एक महिला स्वामी विवेकानन्द जी को मिलीं। स्वामी जी ने उनका 'सिस्टर निवेदिता', नया नामकरण किया। निवेदिता ने स्वामी जी से दीक्षा लेकर उनको अपना गुरु माना और भारतवासियों की हर प्रकार मदद की।[12]

परिणाम

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद अथवा आतंकवाद लाल - बाल - पाल घोष आदि के राजनीतिक उग्रवाद से सर्वथा भिन्न था। उग्रवादी उदारवादियों की राजनीतिक भिक्षावृत्ति की नीति से असन्तुष्ट होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध सक्रिय विरोध का प्रतिपादन करते थे, लेकिन यह विरोध अथवा संघर्ष शान्तिमय और दबावपूर्ण होता था जिसमें हिंसा और तोड़ - फोड़ को कोई प्रश्रय नहीं दिया गया था। इसके विपरित क्रांतिकारियों ने हिंसा और तोड़ - फोड़ को अपना हथियार बनाया।[6]

क्रांतिकारी 'बम्ब नीति' में विश्वास करते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उन्होंने गुप्त व खुली हत्याओं द्वारा सरकारी सम्पत्ति के विनाश, तोड़ - फोड़ आदि का सहारा लेने में कुछ भी अनुचित नहीं समझा। आतंकवादी - क्रांतिकारी कोरे हत्यारे या डाकू नहीं थे - वे देशभक्त थे और मातृभूमि के लिए सिर कटा देने की तमन्ना रखते थे। क्रांतिकारी विदेशी शासकों के दिल में यह भय पैदा कर देना चाहते थे कि देशभक्तों की हत्याओं का बदला हत्याएँ हांेगी। 'रेन्ड के सहायक लेफ्टिनेन्ट जनरल डायर, सांडर्स आदि ब्रिटिश अधिकारियों की हत्याओं और 1907 में मिदानापुर के निकट उप - गर्वनर की रेलगाड़ी उड़ाने के प्रयास, क्रांतिकारियों द्वारा किए गए।' क्रांतिकारी अथवा आतंकवादी का विस्फोट महाराष्ट्र में हुआ, जहाँ 1899 में मिरेन्ड तथा ले. आयरेस्ट को गोली का शिकार बनाया गया। महाराष्ट्र में वीर सावरकर, श्यामजी वर्मा, गणेश सावरकर और चापेकर बन्धु, बंगाल में वीरेन्द्र कुमार घोष, भुर्वेन्द्र नाथ दत्त, पंजाब में सरदार अजीत सिंह, भाई परमानन्द, बालमुक्द तथा लाला हरदयाल प्रमुख क्रांतिकारी नेता थे। इंग्लैण्ड में श्याम जी कृष्णा वर्मा, फ्रांस में मैडम कामा और अमेरिका में लाल हरदयाल ने क्रांतिकारी गतिविधियो का संचालन किया।[11]

स्वतंत्रता आन्दोलन की क्रांतिकारी महिलाओं में एक और प्रमुख नाम उभर कर आता है - वह है 'दुर्गा भाभी' का। दुर्गा भाभी का जन्म 7 अक्टूबर, 1907 को इलाहबाद में हुआ था।' दुर्गा भाभी भगवती बाबू जैसे महान क्रांतिकारी की पत्नी थी। उन्होंने अपने पति की क्रांतिकारी गतिविधियों में पूरा सहयोग दिया। वे दल के लिए पैसा इकट्ठा करती थी, क्रांति से संबन्धित परचे बाँटती थी, घर पर आए क्रांतिकारियों का स्वागत - सत्कार करती थी, उन्हें आश्रय देती थी। भगत सिंह द्वारा सांडर्स की हत्या करने पर वह भगत की पत्नी के रूप में उनके साथ कलकत्ता गई। भाभी ने इस जोखिम भरे रास्ते में आवश्यकता पड़ने पर उपयोग के लिए पिस्तौल भी छिपा रखी थी। 'भगवती बाबू अपनी पत्नी के इस साहसपूर्ण कार्य पर बहुत प्रसन्न हुए। भाभी ने गांधी जी से अन्य क्रांतिकारियों के साथ भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को छुड़ाने की शर्त वायसराय के सामने रखने के लिए कहा।' बम्बई में भाभी ने बाबा पृथ्वी सिंह आजाद के सहयोग से पुलिस कमिश्नर हेली को मारने की योजना बनाई लेकिन वह योजना सफल न हो सकी। इतिहास साक्षी है कि इस आदर्श पति - पत्नी ने वास्तव में ही, क्रांतिकारी देशभक्तों के साथ भैया - भाभी का संबंध निभाया। सरला देवी जिन्होंने स्वदेशी आन्दोलन और बंग - भंग आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, उन्होंने भी अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया और 1905 में बंगाल व पंजाब के क्रांतिकारियों के बीच संपर्क सूत्र का काम किया।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

दुर्गा भाभी का नाम कौन नहीं जानता। सरदार भगतसिंह को बचाने के लिए वे स्वयं अपनी और अपने पुत्र तक की जान पर खेलकर उन्हें सुरक्षित निकाल ले गईं और अन्तिम समय तक अपने पति की इच्छाओं का सम्मान करते हुए देश रक्षा और स्वतंत्रता के युद्ध में संलग्न रहीं। नेता जी सुभाष की आजाद हिन्द फौज की कैप्टन लक्ष्मी सहगल और अन्य महिलाएँ वाहिनी में अपनी जान पर खेलती रहीं।[7]

हिमाचल प्रदेश के राजा भवानी सेन की तीसरी पत्नी रानी खैरागढ़ी क्रान्तिकारियों को भरपूर धन देकर उनकी सहायता करती रहीं और अपना बस चलते तक उन्होंने उन क्रान्तिकारी वीरों को सुरक्षा प्रदान की जिन्हें बाद में पकड़े जाने पर काले पानी भेज दिया गया।

सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी लेखनी और अहिंसात्मक आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी निभाई। महारानी जिन्दा ने अपना अन्तिम समय रंगून की जेल में ही गुजारा। भारत के विभिन्न भागों से इसके भी अतिक्ति चीन्हें-अनचीन्हें अनेक नारी रत्नों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर स्त्री जाति को गौरवान्वित किया है। अतः हम सगर्व कह सकते हैं कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर भारतीय नारी के इतिहास को गौरवान्वित और समृद्ध किया है।

पंडित नेहरू ने अपनी पुस्तक 'वीमेंस ऑफ़ इण्डिया' में लिखा है कि 'स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।' शिक्षित वर्ग तो एक ओर, हज़ारों, लाखों अनपढ़, अशिक्षित और अपरिपक्व नारियों ने देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर अदम्य साहस और विलक्षण सूझ-बूझ का परिचय दिया है।[10]

नशे की हर वस्तु को नष्ट और बरबाद करने का इन्होंने प्रण कर लिया। चाहे जहाँ इन्हें महुआ आदि मादक द्रव्य बनाने वाले पेड़ मिलते, उन्हें काट डालतीं। किसी चुनौती, किसी बाधा को मानने के लिए ये ग्रामीण संगठन तैयार नहीं थे। इस प्रकार भारत को सुखी एवं समृद्ध बनाने का यह संघर्ष भारत के स्वतंत्र होने तक चलता ही रहा, अनवरत, अबाध।

आज जिस स्वतंत्रता का हम उपयोग अथवा उपभोग कर रहे हैं, वह इन्हीं विदुषी दबंग और बलिदानी वीरांगनाओं के रक्तकणों से सुसज्जित है। स्वतंत्र भारत में इस पूजनीय मातृशक्ति को नमन करने और इनके पदचिन्हों पर चलने का यदि हम प्रयास भर भी कर लेते हैं तो हमारा जीवन सार्थक हो जाता है।

सरदार भगतसिंह को बचाने के लिए वे स्वयं अपनी और अपने पुत्र तक की जान पर खेलकर उन्हें सुरक्षित निकाल ले गईं और अन्तिम समय तक अपने पति की इच्छाओं का सम्मान करते हुए देश रक्षा और स्वतंत्रता के युद्ध में संलग्न रहीं।

श्रीमती कामदार, अवंतिका बाई गोखले, कमलम्मा, सत्यवती, कृष्ण देवी पंजीकर, जयश्री राजा जी, हंसा महतो, पेरिन कप्तान, नीलावती मुंशी, मनीबेन, देव महत्रे बहनें और ऐसे ही अनगिनत नाम हैं जिन्होंने अपने बलिदान से देश के इतिहास का एक सुनहरा अध्याय लिखा है।[8]

निष्कर्ष

महिलाओं ने देश के स्वतंत्रता समर की प्रत्येक रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्त्रियों के द्वारा अपने लिए मताधिकार की माँग को लेकर लड़ना हो या देश को स्वतंत्र कराने में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की बात हो , स्त्रियों ने सभी क्षेत्रों में पूरी तत्परता के साथ काम किया। वैदिक काल के बाद भले ही नारी इस समय पुरुषों से अनेक क्षेत्रों में पीछे थी लेकिन इन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने देश के स्वतंत्रता संघर्ष में भाग लिया। असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण ही आजादी का यह महान आंदोलन सक्रिय बन पड़ा। स्त्रियों ने देश के प्रति प्रेम भावना का परिचय देते हुए व उसे स्वतंत्र कराने के लिए सभी तरीको से अपना योगदान दिया। शांति प्रिय आंदोलनों से लेकर क्रांतिकारी आन्दोलनों में स्त्रियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया।[9]

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com |

| Volume 3, Issue 11, November 2020 |

संदर्भ

1. विपिन चन्द्र, भारत का स्वतन्त्रता संघर्श, पृ. सं. 2
2. विश्व प्रकाश गुप्ता, मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं, पृ. सं. 91
3. डॉ. एस. एल. नागोरी, कान्ता नागोरी, भारतीय वीरांगनाएँ, पृ. सं. 14-15
4. विश्वप्रकाश गुप्त, मोहिनी गुप्त, स्वतंत्रता - संग्राम और महिलाएँ, पृ. सं. 94
5. एल. पी. माथुर, भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी, पृ. सं. 15
6. शालिनी सक्सेना - स्वाधीनता आंदोलन में मध्यप्रान्त की महिलाएं, पृ. सं. - 2
7. आशारानी व्होरा - महिलाएं और स्वराज्य, पृ. सं.- 146
8. प्रयागदत्त शुक्ल - क्रांति के चरण, पृ. सं.- 84
9. मोहम्मद शमीम - छत्तीसगढ में गांधीवादी आन्दोलन में छात्रों की भूमिका (अप्रकाशित शोध प्रबंध), पृ सं. 19
10. विजय एग्न्यू - वीमने इन इण्डियन पालिटिक्स, पृ सं. - 8
11. राज लक्ष्मी गौड़ - नारी जागरण और गांधी जी (लेख), मध्यप्रदेश संदेश, 1971
12. जीवंतराम भगवानदास - महात्मा गांधी जी जीवन और चिंतन, कृपलानी पृ. सं. 91